कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

कुण्डलियाँ

सुवासिता की यात्रा

चमेली कुर्रे 'सुवासिता'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

सुवासिता की यात्रा

(कलम की सुगंध छंदशाला)

चमेली कुर्रे 'सुवासिता'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-234-0
संपादक- **अनिता मंदिलवार "सपना"**
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, चमेली कुर्रे 'सुवासिता'
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY CHAMELI KURRE SUVASITA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

चले निरंतर लेखनी, चमके सृजन ताज।
ईश्वर की महिमा रहे, पूरे हों सब काज।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पल शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया अर्चना पाठक निरन्तर जी का एकल संग्रह **'सुवासिता की यात्रा'** प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया अर्चना जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया अर्चना जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मक ता का परिचायक है ।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

स्नेही चमेली कुर्रे "सुवासिता"

नामारूप सुवासित व्यक्तित्व, कलम की धनी, छंद विधाओं पर गहरी पकड़। आपके कई सांझा संकलन आ चुके हैं। और समय-समय पर विभिन्न मंचों से आपको कई साहित्यिक उपल्ब्धियां मिलती रही है।

आपने बहुत से छंदों के साथ धाराप्रवाह शतक कुण्डलियाँ लिखकर अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया, छंद में कुण्डलियाँ लिखना सभी छंदों में जटिल माना जाता है, उसी विधा को आपकी प्रतिबद्ध लेखनी ने सहज बना कर एक पुस्तक के रूप में पाठकों तक पहुंचाने का सतत प्रयास किया है।

आपकी कुण्डलियाँ सामायिक विषय और प्राकृतिक बिंबों से सजी संवरी हैं आपका शिल्प बिल्कुल सधा हुआ है, आपकी कुण्डलियाँ में एक बात बहुत अभिनव है कि आपने हर कुण्ड़ली को अलग तरह से निभाया है, कहीं भी दोहराव नहीं दिखता। भाषा सहज सुंदर और सीधी पाठक के हृदय तक उतरने वाली है। आज जब कुण्डलिया विधा लुप्त सी हो रही है उस समय में सौ कुण्डलिया लिखकर आपने इस विधा को नव जीवन ही नही दिया है, बल्कि आने वाले समय में साहित्य जगत को एक धरोहर सौंपी है।

गागर में सागर भरे, उत्तम है कृतिकार।
सुवासिता महके सदा, सुंदर है व्यवहार।
सुंदर है व्यवहार, सुरभि बांटें जो भरभर।
लिखती सुंदर लेख, कलम चलती है फरफर।
कहे कुसुम सुन बात, ज्ञान का पढ़लो सागर।
अपने चित में साध झरे कुण्डलिया गागर।।

आपका ये अनुपम सृजन जल्दी ही साहित्य जगत में धूम मचाएगा। आपकी पुस्तक **"सुवासिता की यात्रा"** की सफलता के लिए हृदय तल से शुभकामनाएं।

कुसुम कोठारी

शुभकामना संदेश

प्रिय चमेली कुर्रे 'सुवासिता',

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह 'सुवासिता की यात्रा' में कुण्डलियाँ' विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी। और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक
कलम की सुगंध

कवियत्री की कलम से

रहता नूतन छंद है, शब्द नवीन अपार।
मेरे गुरु विज्ञात जी, नमन करूँ हर बार।।
नमन करूँ हर बार, सृजित हो उत्तम दोहे।
मात पिता भगवान, धन्य कहती मैं तोहे।।
सुवासिता का ज्ञान, सदा ही गुण को लहता।
सोनरहर पितु स्नेह, मात केरा का रहता।।

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि आज अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्यम **'सुवासिता की यात्रा'** एकल संग्रह से मेरा प्रथम छंद बद्ध संग्रह जिसमें 100 कुण्डलियाँ सम्मिलित की गई हैं। प्रकाशित हो रहा है 'सुवासिता की यात्रा' लघु पुस्तिका 50 दिन के सतत परिश्रम से तैयार हुई है। इस पुस्तक का महत्व मेरे लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इन दिनों विज्ञान की छात्रा ने हिंदी छंद साहित्य के कठिनतम सौ छंदो में से एक कठिन छंद की साधना की है। जो मेरी कलम से निकले हिंदी छंद बद्ध **'सुवासिता की यात्रा'** है। मुझे विश्वास है कि पाठक वर्ग इसे पढ़ते समय मेरी इस यात्रा में स्वयं को इस यात्रा का एक हिस्सा अनुभव कर सका तो कलम का चलना सिद्ध हुआ समझूँगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

आपकी अपनी
चमेली कुर्रे 'सुवासिता'

1.

वेणी

लचके जब बाली कमर, वेणी होय निहाल।
दिल पर करती वार है, चलती हिरनी चाल।।
चलती हिरनी चाल, अंग पर हल्के झटके।
करे नयन से कैद, रहे क्षण भर हिय अटके।।
सुवासिता तुम आज, नजर से रहना बचके।
भँवरे हों बेचैन, कमर जब देती लचके।।

2.

कुमकुम

देखा कुमकुम का तिलक, वीर सिपाही भाल।
शस्त्र उठा आगे बढा, वो कालों का काल।।
वो कालों का काल, बहुत ही चौड़ा सीना।
हाथ लिए तलवार, शत्रु का बहे पसीना।।
सुवासिता तुम आज, मिटा दो बंधन रेखा।
शौर्य वंश का लाल, नहीं है इन सा देखा।।

3.

काजल

फैली काजल आँख पर, बहे आँख से नीर।
नमी धरा की देख कर, उठे हृदय में पीर।।
उठे हृदय में पीर, न जाने कितनी रोती।
बहे गंग की धार, मैल मन का यूँ धोती।।
सुवासिता मासूम, हुई है गंगा मैली।
यमुना का क्या दोष, घटायें नभ में फैली।।

4.

गजरा

ला दो गजरा तुम पिया, कर लूँ मैं श्रृंगार।
डोर पिरो ले प्रेम की, महक जाय घर द्वार।।
महक जाय घर द्वार, बाग की वो सब कलियाँ।
रहते सुगँधित गाँव, रहें हँसती सब गलियाँ।।
देख चमेली फूल, राग खुशियों के गा दो।
मनमोहक हो रूप, फूल ऐसा तुम ला दो।।

5.

पायल

पायल की झँनकार ने, बहुत मचाया शोर।
प्रेमी मन उन्माद में, आकर्षित बिन डोर।।
आकर्षित बिन डोर, कामना हिय की खोले।
छम-छम करके रोज, बजे घुँघरू यूँ बोले।।
सुवासिता दे ध्यान, बनो न दिलों की हायल।
सुनो हृदय की बात, यही कहती हैं पायल।।

6.

कंगन

कंगन तो हर हाल में, बजने को तैयार।
नरम गरम से स्पर्श में, ढूंढ़े पी का प्यार।।
ढूंढ़े पी का प्यार, हृदय की गति भी बढ़ती।
दिल का हर अरमान, बोल बिन सजनीपढ़ती।।
सुवासिता से आज, चहक उठता वह आँगन।
जहाँ प्रेम की डोर, बँधी कर में बन कंगन।।

7.

बिंदी

बिंदी तेरे नाम की, देख लगाई माथ।
हमराही हम आज तुम, हर पल चलते साथ।।
हर पल चलते साथ, जिंदगी की हर राहें।
धूप छाँव को देख, थाम लेते तुम बाहें।।
सुवासिता कर जोर, बनो तुम पादालिंदी।
भवसागर हो पार, प्रीत की दे दे बिंदी।।

8.

डोली

डोली आती देख कर, मुख पर छाया नूर।
बाबुल माँ को छोड़कर, जाना होगा दूर।।
जाना होगा दूर, हृदय में दुल्हन कहती।
सिसक सिसक कर आज, नेह की धाराबहती।।
सुवासिता का हाथ, थाम लेगा हमजोली।
गले लगा कर मात, विदा कर देगी डोली।।

9.

आँचल

आँचल में माँ के पयो, जीव दान का घोल।
स्वर्ग चरण में देख ले, कहे जिसे अनमोल।।
कहे जिसे अनमोल, भाव में ममता बहती।
वातसल्य की मूर्त, दिखे ज्यों जगती रहती।।
सुवासिता क्यों आज, मची है मन में हलचल।
बने धूप में छाँव, यही ममता का आँचल।।

10.

कजरा

कजरा तेरी आँख का, लेता मुझको लूट।
प्यार भरा प्रस्ताव सुन, तू दे मुझको कूट।।
तू दे मुझको कूट, लौंग सी चाय बनाती।
आते-जाते लोग, मुझे उनसे पिटवाती।।
सुवासिता सुन मर्म, बना बेचारा गुजरा।
हालत रहा बिगाड़, यही आँखो का कजरा।।

11.

चूड़ी

चूड़ी वाले हाथ को, भले कहो कमजोर।
उपमा भी देते रहो, कामचोर का शोर।।
कामचोर का शोर, पहन ले चूड़ी कहते।
खींच रहे खुद पाँव, काँच तब टुकडे रहते।।
सुवासिता तो रोज, बने है पग-पग गूड़ी।
करे जगत की सृष्टि, खनक कर ही ये चूड़ी।।

12.

झुमका

झुमका तू मुझको बना, रख ले अपने साथ।
इठलाऊंगा भाग्य पर, तू जो दे दे हाथ।।
तू जो दे दे हाथ, मिटेंगे हिय के खटके।
आईना ले देख, कमर क्यों तेरी मटके।।
सुवासिता मत सोच, दिखे जो सुन्दर लड़का।
अपना ले तत्काल, बना ले उसको झुमका।।

13.

जीवन

जीवन में बिन प्रेम के, बिगड़ चुके है खेल।
चौमासे में मेघ ज्यों, भूले रवि भू मेल।।
भूले रवि भू मेल, किरण को भी पहुँचाना।
जीने का आनंद, फिसल कर फिर उठ जाना।।
सुवासिता मन झूम, देखकर बरसा सावन।
इन्द्रधनुष हो रोज, सप्तरंगी हो जीवन।।

14.

उपवन

उपवन तो मरघट दिखे, बिन पौधों के आज।
पछताएगा नर बहुत, पड़े भयंकर गाज।।
पड़े भयंकर गाज, जीव का होगा रोना।
धरती पर हो नीर, बीज कुछ ऐसे बोना।।
सुवासिता दे ध्यान, लगे मनभावन सावन।
खिले चमेली फूल, सुशोभित हो हर उपवन।।

15.

कविता

लिखने कविता मैं लगी, हृदय बसा कर मीत।
मीत देख मन की तड़प, प्रीत यही है प्रीत।।
प्रीत यही है प्रीत, फूल कलियाँ मुस्काई।
मुस्काई जब मंद, देख ऊषा शरमाई।।
शरमाई मन मग्न, प्रीत तब लगती दिखने।
दिखने लगते रंग, शब्द मैं भूली लिखने।।

16

ममता

ममता की मैं छाँव में, पल-पल पलती आज।
माँ का आँचल शीश पर, होता है सरताज।।
होता है सरताज, प्रेम का जैसे धागा।
माँ को करता दूर, बने वो स्वयं अभागा।।
सुवासिता की ज्योति, हरे ये जग की तमता।
पग-पग मिलता हर्ष, मिले जब माँ कीममता।।

17.

बाबुल

बाबुल की आँखे करे, हरदम एक सवाल।
घड़ी कष्ट की देख कर, पूछे सारा हाल।।
पूछे सारा हाल, चाल फिर मैं बतलाती।
दे कर मुख मुस्कान, हृदय में दर्द छुपाती।।
सुवासिता कर स्नेह, कहे बाबू जी बुलबुल।
चूमे मेरा भाल, बलाये लेते बाबुल।।

18.

भैया

भैया क्या मैं बोझ हूँ, बात करें दो भ्रूण।
जान सुता फिर गर्भ में, नष्ट हुई ये जूण।।
नष्ट हुई ये जूण, मुझे कुछ तो समझाओ।
बेटे से क्यों मोह, सुता का दोष बताओ।।
सुवासिता मन सोच, भेद यह है क्यों मैया।
जीने का अधिकार, दिला दो अब तो भैया।।

19.

बहना

बहना है मेरी सखी, रहते है हम साथ।
हर गम मिलकर बाँटती, चले पकड़ कर हाथ।।
चले पकड़ कर हाथ, हाथ ये विजय दिलाता।
समझें कैसे भेद, भेद ये समय बनाता।।
सुवासिता सुन राग, रागमय हो कर रहना।
करना मत ये भूल, भूल मत जाना बहना।।

20.

सखियाँ

सखियाँ मेरी स्वर्ण सी, मैं कुंदन का शोर।
तारा माही संग में, आती घर की ओर।।
आती घर की ओर, कहें चल खो खो खेलें।
किठ-किठ खेलें आज, एक पल जीवन जी लें।।
सुवासिता मन सोच, चमक उठते मन अखियाँ।
अच्छे थे वो वक्त, याद अब तक वो सखियाँ।।

21.

कुनबा

सपना कुनबा देखता, हर अपना हो पास।
मंदिर की घंटी बजे, यू बजती है श्वास।।
यू बजती है श्वास, श्वास जब मुख से निकली।
गुजरी कैसी रात, रातभर रोती तितली।।
सुवासिता सुन राग, राग में वो ही अपना।
भले एक हो तार, तार में बाधो सपना।।

22.

पीहर

पीहर हो अपना सदा, ज्यों पीपल की छाँव।
भैया मेरे बात सुन, खेलो मत धन दाँव।।
खेलों मत धन दाँव, प्रीत में रीत समाई।
क्यों शादी के बाद, हुई है सुता पराई।।
सुवासिता मन हर्ष, झूम के गाती सोहर।
फैलाकर मन पंख, सोच में उड़ती पीहर।।

23.

पनघट

पनघट सब वीरान है, कहे किसे मन पीर।
घर-घर में नल लग गये, बहे गली में नीर।।
बहे गली में नीर, हृदय पंछी है प्यासा।
गया प्रीत घट रीत, रहे हर जीव उदासा।
सुवासिता मन द्वार, लगे यादों की जमघट।
मिले कष्ट हर रोज, सिसकते दिखते पनघट।।

24.

सैनिक

सैनिक कहता दोस्त से, निकट बहन का ब्याह।
घर पर माँ पापा सभी, देखे मेरा राह।।
देखे मेरा राह, हुई है खारिज छुट्टी।
गया नही जो गाँव, बहन कर देगी कुट्टी।।
सुवासिता को गर्व, सुना जब भैया नैतिक।
ऐसे ही है शूर, निभाते वादे सैनिक।।

25.

कोयल

जग में कोयल काग हैं, एक रंग दो जीव।
मित्र कंठ से कोकिला, कागा बना अमीव॥
काग बना अमीव, मारते पत्थर सारे।
करे जो मीठी बात, चापलूसी के प्यारे।।
सुवासिता दे ध्यान, देख चालाकी रग में।
कोयल मारे मार, सदा कौए को जग में।।

26.

अम्बर

साजन बन अम्बर खड़ा, सदा धरा के साथ।
साजन की सजनी धरा, दूर मिलाये हाथ।।
दूर मिलाये हाथ, जहाँ अम्बर है झुकता।
करे मेघ बरसात, भाव प्रेमी का चुकता।।
सुवासिता ये नेत्र, सूर्य चंदा से राजन।
मिले भूमि से नित्य, बना यूँ अम्बर साजन।।

27.

अविरल

बस में अविरल बैठ कर, सोचे लड़का आज।
ये लड़की तो पट गई, बना अचानक काज।।
बना अचानक काज, छेड़ता धीरे-धीरे।
मोबाइल को खोल, खींचता वो तस्वीरे।।
सुवासिता का क्रोध, दिखा था फिर नस-नस में।
उड़ा दिये सब होश, लगा थप्पड़ जब बस में।।

28.

सागर

सागर के उर में उठे, लहर सैकड़ों आज।
सदा व्यर्थ व्याकुल रहे, बजे लहर का साज।।
बजे लहर का साज, दिलासा खुद को देता।
रहकर हरदम मौन, समाहित हिय कर लेता।।
सुवासिता दे ध्यान, छलकती आधी गागर।
इतना कौन विशाल, भला जितना है सागर।।

29.

अनुपम

अनुपम ही मुझको दिखे, चित्र कोट की धार।
देख मनोहर दृश्य को, लगता हीरा हार।।
लगता हीरा हार, मनोरम दिखता झरना।
चला बुझाने प्यास, तपन भू शीतल करना।।
सुवासिता सुन बात, राह पर बढ़ना हरदम।
जीवन का ये स्रोत, मिले संदेशा अनुपम।।

30.

धड़कन

धड़कन पर अपनी मुझे, होता हरदम नाज।
जग के हर सुख दुख सभी, रखे छिपाये राज।।
रखे छिपाये राज, शिकायत न कभी करती।
करती सब महसूस, मधुर बोली पर मरती।।
सुवासिता दे ध्यान, न हो सीने में जकड़न।
जिन्दा है इंसान, बताती है ये धड़कन।।

31.

वीणा

वीणा की झंकार है, सब का जीवन आज।
सुख-दुख के हर राग से, सजे हुए हैं साज।।
सजे हुए हैं साज, दृष्टिजन रखते जैसी।
स्वरलहरी की तान, बने फिर हरदम वैसी।।
सुवासिता दे ध्यान, अहम ही करता चूर्णा।
गम को जाते भूल, बजे जब सुन्दर वीणा।।

32.

नैतिक

नैतिक मूल्यों की समझ, समझ सिद्ध हो काम।
भेदभाव मन से मिटे, होगा तेरा नाम।।
होगा तेरा नाम, बात भी मार्मिक होगी।
आस बने विश्वास, स्वस्थ होते है रोगी।।
सुवासिता दे ध्यान, लालची बने अनैतिक।
समझो गीता सार, काम फिर करना नैतिक।।

33.

विजयी

होते है विजयी वही, करते कर्म महान।
वक्त पकड़ आगे बढ़े, बने नेक पहचान।।
बने नेक पहचान, नाम भी जग में होता।
यश का खुलता द्वार, बीज श्रम का जो बोता।।
सुवासिता दे ध्यान, समय खो कर क्यों रोते।
लिखो नया इतिहास, स्वप्न पूरे सब होते।।

34.

भारत

अपना भारत देश तो, दिखता विश्व महान।
अनेकता में एकता, है इसकी पहचान।।
है इसकी पहचान, लोग मिलकर सब रहते।
दुनिया में इतिहास, नया हरदम जन रचते।।
सुवासिता को गर्व, करे पूरा सब सपना।
दिव्य ज्ञान का दान, किये है भारत अपना।।

35.

छाया

छाया चलती साथ में, बनकर के हमराह।
देह उसे पहचानती, संग चले हर राह।।
संग चले हर राह, बहुत ये लगता प्यारा।
अगर छोड़ दे हाथ, लगे अधुरा जग सारा।।
सुवासिता के प्राण, करे है हरदम माया।
सुख दुख में ये साथ, सदा ही देती छाया।।

36.

निर्मल

निर्मल बालक मन रहें, भेद-भाव से दूर।
खुद रूठे खुद मानते, खेल-खेल में चूर।।
खेल-खेल में चूर, चूर शीशे-सा होते।
होते वृद्धे रंज, रंज हो बच्चें रोते।।
सुवासिता मन राग, राग कर देते अविरल।
मन हर लेती बात, बात के बालक निर्मल।।

37.

विनती

विनती ये प्रभु वर सुनो, माँगे हम वरदान।
रसना रस से हो भरी, बोले गीता ज्ञान।।
बोले गीता ज्ञान, मार्ग भटको को देती।
भ्रमित हुऐ जब पार्थ, सकल चिन्ता हर लेती।।
सुवासिता हिय मध्य, बसी आकृति क्यों छिनती।
यही रही है सोच, सुनोगे कब तुम विनती।।

38.

भावुक

होते है भावुक सभी, बहे आँख से नीर।
चिंता करते हर पहर, कहे किसे ये पीर।।
कहे किसे ये पीर, सोचते मन ही मन में।
जीव सभी निर्जीव, पीर सहते है तन में।।
सुवासिता दे ध्यान, जगत में क्यों सब रोते।
हर्ष सहित ये काज, सरलता से सब होते।।

39.

धरती

धरती नभ से बोलती, सुन ले मेरे मित्र।
दूषित है जलवायु यूँ, हुई अशुद्ध विचित्र।।
हुई अशुद्ध विचित्र, नजर है लगती किसकी।
रोती मैं दिन रात, न कोई सुनता सिसकी।।
सुवासिता कर ख्याल, आज वो पीड़ा हरती।
ब़रसा दो रस प्रेम, सुनो नभ कहती धरती।।

40.

मानव

दिखते मानव जाति पर, देखो आज कलंक।
लालच में सब झूमते, क्या राजा क्या रंक।।
क्या राजा क्या रंक, विकारो में है फँसते।
खुद की ठोकर भूल, दूसरो पर है हँसते।।
सुवासिता ये व्यंग्य, हास्य सी रचना लिखते।
करे निरर्थक बात, श्याम मन उज्ज्वल दिखते।।

41.

गागर

खाली गागर ज्ञान की, सदा भरे गुरु एक।
संस्कृति से संस्कार की, पद पंकज सर टेक।।
पद पंकज सर टेक, ज्ञान गुरु से ही मिलता।
जग रूपी यह बाग, सुगन्धित मय हो खिलता।।
सुवासिता तू फूल, सदा गुरु तेरे माली।
बनके कृपा निधान, भरें जो गागर खाली।।

42.

सरिता

सरिता बनकर मैं बहूँ, तू बन सागर आज।
मुझे समाहित कर सखे, बनकर के हमराज।।
बनकर के हमराज, जला दे ये जग सारा।
गम के बीती रात, लगे दिन सुख सा प्यारा।।
सुवासिता की प्यास, बुझाती है ये कविता।
मन में उठी तरंग, लगे वो न्यारी सरिता।।

43.

गहरा

सपना गहरा देखते, मात पिता तो रोज।
हरदम संतति के लिए, करें कौर की खोज।।
करें कौर की खोज, सदा खुद भूखे रहते।
ऐसा पालन देख, नमित हो संतति कहते।।
सुवासिता कर जोड़, वार दे तन-मन अपना।
छू कर चरण असीम, पूर्ण कर गहरा सपना।।

44.

आँगन

आँगन हरदम हो बड़ा, खिले प्रेम के फूल।
पल-पल मिल कर रोज ही, करे साफ मन धूल।।
करे साफ मन धूल, सदा ही मिलकर रहते।
व्यथित हुए क्यों आज, कष्ट तो सब ही सहते।।
सुवासिता दे ध्यान, नही टूटे कोई मन।
मिटते जब हिय भेद, फूल से महके आँगन।।

45.

आधा

आधा 'र' रहे प्रीत में, दिखता अर्ध 'श' श्याम।
नारीश्वर हो पूर्ण तब, अर्ध-अर्ध अभिराम।।
अर्ध-अर्ध अभिराम, सृष्टि की रचना करते।
बढ़ती हरदम शक्ति, कष्ट दोनों ही हरते।।
सुवासिता की चाह, मिटे सब की हर बाधा।
जीवन हो खुशहाल, रहे कोई क्यों आधा।।

46.

यात्रा

करते यात्रा जब कभी, रखना तुम ये ध्यान।
रख हरदम सामान कम, लोग दिये ये ज्ञान।।
लोग दिये ये ज्ञान, नही बाहर का खाना।
फल रख लो तुम साथ, दूर होता जब जाना।।
सुवासिता सुन बात, तत्व पोषक फल भरते।
दुर्घटना हो बंद, सफल यात्रा सब करते।।

47.

कोना

कोना में बूढ़े पढ़े, होकर के लाचार।
बोझिल जीवन है बना, सोचे मन हर बार।।
सोचे मन हर बार, युवा पीढ़ी क्यों भूली।
जलता अन्तः देख, नशे में ये जब झूली।।
सुवासिता ये वृद्ध, खरा है सच्चा सोना।
समझो दे कर ध्यान, ज्ञान का कैसा कोना।।

48.

मेला

मेला मिथ्या का लगा, कहता है संसार।
छल का मानव आज तो, करता है व्यापार।।
करता है व्यापार, झूठ की दे कर बोली।
जोकर जैसे खेल, खेलते झूठी खोली।।
सुवासिता दे त्याग, भीड़ का मतबन रेला।
प्रभु से नाता जोड़, छोड़ मिथ्या का मेला।।

49.

धागा

धागा रक्षा सूत्र का, बांधे बहना प्यार।
कच्चे को पक्का करे, रिश्तों में अधिकार।।
रिश्तों में अधिकार, सदा दे मन को जोड़े।
कुछ फूले मन आज, भरोसा पल-पल तोड़े।।
सुवासिता दे ध्यान, रहे कोई न अभागा।
पावन बंधन प्रेम, बना है कच्चा धागा।।

50.

बिखरी

बिखरी है ये जिंदगी, बीच राह में आज।
रोज रोटियों के लिए, करें बालिका काज।।
करें बालिका काज, ईंट पत्थर ये ढोती।
बचपन कर बर्बाद, बैठ कोने में रोती।।
सुवासिता फिर आज, वही शिक्षा से निखरी।
कलम थमा दी हाथ, चाँदनी सी ये बिखरी।।

51.

गलती

गलती पर अपनी सभी, परदा देते डाल।
आदत ये इंसान की, करे हाल बदहाल।।
करे हाल बदहाल, नशे में डूबे रहते।
नहीं सोच अंजाम, डरे मन से ये कहते।।
सुवासिता कर गौर, सदा खुद को क्यों छलती।
हाथ जोड़ कर रोज, वही फिर करती गलती।।

52.

बदला

बदला जब जब वक्त है, बदल गये तब लोग।
अपने भी बदले सभी, यह परिवर्तन रोग।।
यह परिवर्तन रोग, लगा है जग में कैसे।।
लोटा पेन्दी देख, अलग रहते है ऐसे।
सुवासिता ले मान, भूल कर पिछला अगला।
रहे एकजुट साथ, त्याग दो मन का बदला।।

53.

दुनिया

रहते दुनिया में कई, जन्म जात दिव्यांग।
अलग जरा इंसान से, दिव्य शक्ति साष्टांग।।
दिव्य शक्ति साष्टांग, न दिखते सुन्दर तन।
रहते है विकलांग, जगत में हर नर मन से।।
सुवासिता संघर्ष, करें ये उपमा कहते।
विजय मार्ग के चिन्ह, सदा इनके पग रहते।।

54.

तपती

तपती छाती दूध की, माता हुई निहाल।
बेटा बाड़ प्रकोप से, ग्रास बनाये काल।।
ग्रास बनाये काल, वक्षस्थल टपके अमरित।
आँचल में वो पुत्र, नही अब होता विचरित।।
सुवासिता बिन बाल, पुत्र मेरा वो जपती।
तड़पे बहुत अथाह, पीर से छाती तपती।।

55.

मेरा

मेरा कैसा भाग्य है, सब कुछ आधा देख।
कर्म फलित फल अर्ध हैं, कैसा विधना लेख।।
कैसा विधना लेख, पूर्ण मुझको कब मिलता।
मुरझाता हैं पुष्प, चमन में देखा खिलता।।
सुवासिता ले मान, भाग्य का है ये फेरा।
तेरा है जो पुष्प, बना लेगा वो मेरा।।

56.

सबका

सबका प्रिय कान्हा रहे, कान्हा का प्रिय कौन।
बैजंतीमाला दिखे, सखा रहें सब मौन।।
सखा रहें सब मौन, साथ में मिलकर रहते।
बिन धागे के आज, प्रेम में बंधे कहते।।
सुवासिता तो फूल, बनी बैजंती कब का।
माला बनकर कंठ, लगा कान्हा प्रिय सबका।।

57.

आगे

आगे बढ़ना नर सदा, सच्चाई की राह।
नज़र लक्ष्य को भेद ली, मंजिल थामे वाह।।
मंजिल थामे वाह, बात मन की ही सुनना।
बहकावे में आज, गलत रास्ते मत चुनना।।
सुवासिता तो रोज, मिले ठोकर तब जागे।
पल में पल पहचान, नही कुछ पल से आगे।।

58.

मौसम

कहता हर मौसम सदा, रूप रहे जन संग।
कैसा होता अंत है, जाने कटी पतंग।।
जाने कटी पतंग, डोर से बंधी उड़ती।
दिये गले मिल काट, संग किस्मत जब जुड़ती।।
सुवासिता दे ध्यान, पास अपने कब रहते।
वक्त देख इंसान, बदलते मौसम कहते।।

59.

जाना

जाना मुझको है कहाँ, पीहर या ससुराल।
मन ही मन सोचे सुता, बात यही हर हाल।।
बात यही हर हाल, पराई सब क्यों कहते।
पूर्ण करे दायित्व, कष्ट हिय कितने सहते।
सुवासिता पहचान, सदा रिश्तों को माना।
पीहर या ससुराल, रहे बस आना जाना।

60.

करना

करना ऐसे काम तुम, स्वच्छ रहे यह देश।
गाँव शहर रख साफ मन, जग को दे संदेश।।
जग को दे संदेश, करो पूरा हर सपना।
बीमारी से दूर, जगत में हो सब अपना।।
सुवासिता दे ध्यान, पीर अपनो की हरना।
फर्ज निभा खुद रोज, स्वच्छ भारत को करना।।

61.

दीपक

अपना दीपक जब जले, भरे सदा विश्वास।
जैसे सैनिक वीर से, रहती सबको आस।।
रहती सब को आस, वतन का हो रखवाला।
तिमिर हरण बन दीप, देश में करे उजाला।।
सुवासिता कुछ लोग, देखते ऐसा सपना।
करे वतन से प्यार, बने वो सैनिक अपना।।

62.

पूजा

पूजा घोड़ी चढ़ चली, लाने दूल्हा आज।
बांधे सर पे सेहरा, ले बाराती साज।।
ले बाराती साज, अनोखी है ये शादी।
नई प्रथा शुरुआत, दिखे कुछ आशावादी।।
सुवासिता संसार, नया कुछ चाहे दूजा।
ऐसा ही कुछ आज, करे ये बेटी पूजा।।

63.

थाली

थाली खाली हाथ में, भूखों की पहचान।
कैसा विधना लेख है, सोचे वे इंसान।।
सोचे वे इंसान, कहाँ से लाये रोटी।
रोजगार है बंद, मार किस्मत पे खोटी।।
सुवासिता कुछ सोच, लगे हिरदे पे गाली।
भोज चाहिए आज, सोचती ऐसे थाली।।

64.

बाती

बाती दीया बन चले, मिलकर दोनों संग।
हर पल में हर तम मिटे, जीते जग में जंग।।
जीते जग में जंग, बने सहयोगी ऐसे।
मन में हो विश्वास, बने कुछ पूरक वैसे।।
सुवासिता ये सोच, गीत खुश हो कर गाती।
साजन थामे हाथ, कहें हम दीया बाती।।

65.

आशा

आशा में पीड़ा छिपी, पीड़ा में इंसान।
लोभ मोह के पास से, बना हुआ हैवान।।
बना हुआ हैवान, सभी लालच से कहते।
जीवन करते नष्ट, भ्रष्ट पथ से ये रहते।।
सुवासिता मन सोच, हुई क्यों आज निराशा।
सोच समझ अनमोल, रहे जीवन में आशा।।

66.

उड़ना

उड़ना गिरना हो रहा, आज समय के साथ।
बहुत लचक इनमें दिखे, रहे सफल ये हाथ।।
रहे सफल ये हाथ, नही मिथ्या में रहते।
पंख काटते लोग, यही पंछी सब कहते।।
सुवासिता सुन बात, सदा तुम नभ से जुड़ना।
लक्ष्य रहे तुम साध, नही फिर गिरना उड़ना।।

67.

खिलना

खिलना मन के बाग में, साजन बन कर फूल।
महक उठो हर अंग से, रंग बनो तुम स्थूल।।
रंग बनो तुम स्थूल, मांग भर लूँ मैं मेरी।
सात जन्म का साथ, बाँह पकड़ी है तेरी।।
सुवासिता है ब्याह, पूर्व जन्मों का मिलना।
भ्रमर बने तुम नेक, कली बन मेरा खिलना।।

68.

होली

आता होली पर्व जब, देता ये संदेश।
धूँ-धूँ जलती लकड़ियाँ, यही सत्य परिवेश।।
यही सत्य परिवेश, जलेंगे झूठे ऐसे।
हुई होलिका खत्म, आग में जलती जैसे।।
सुवासिता उल्लास, मनाया हरदम जाता।
जीत सका कब झूठ, बताने सब को आता।।

69.

साजन

बहते पानी धार पे, लिखते साजन नाम।
चाहत के हर रंग जब, सदा दिखे अभिराम।।
सदा दिखे अभिराम, इंद्र-धनुषी कहलाये।
प्रीत नाव में बैठ, पार सागर कर जाये।
सुवासिता के हाथ, थाम सहगामी रहते।
प्रेम लहर में रोज, साथ फिर दोनों बहते।।

70.

सजना

दर्पण नर सब देखकर, सजना चाहे रोज।
भटके है मन बावरा, आज करे कल खोज।।
आज करे कल खोज, जवानी क्यों ढल जाती।
देख समय का खेल, झुर्रियाँ तन पर आती।।
सुवासिता ये सोच, किया है सब पल अर्पण।
बूढ़े कहते आज, नहीं हम देखें दर्पण।।

71.

डोरी

डोरी में दी ढील जब, बिगड़ा खुद का लाल।
हालत देख किशोर की, बदली इनकी चाल।।
बदली इनकी चाल, नही ये माने कहना।
पीते नित्य शराब, कष्ट पड़ता है सहना।।
सुवासिता दे ध्यान, आँख की पकड़ी चोरी।
मात-पिता बन मित्र, कसो ये ढीली डोरी।।

72.

बोली

बोली ऐसे बोलिए, मन को ले जो जीत।
दुख में जब जब पग पडे, साथ चले हर मीत।।
साथ चले हर मीत, काम संयम से लेते।
कटु वाणी तो आज, तोड़ रिश्ते को देते।।
सुवासिता जब झूठ, बोल देती जो भोली।
जीवन में सब कष्ट, खड़े करती है बोली।।

73.

पाना

पाना हरदम लक्ष्य को, चाहे जग में लोग।
अपने-अपने कर्म से, लेते दुख को भोग।।
ते दुख को भोग, नही सत कोई जाने।
मिलती किस्मत लेख, सभी इसको है माने।।
सुवासिता दे ध्यान, समझ इस जग में आना।
करे परिश्रम रोज, लक्ष्य जिसको है पाना।।

74.

खोना

खोना सब कुछ भाग्य की, बनी हुई जब रीत।
उठो बढ़ो आगे सदा, करो कर्म से प्रीत।।
करो कर्म से प्रीत, यही सारा जग कहता।
कामचोर को देख, सदा सब खोता रहता।।
सुवासिता दे ध्यान, वही होता जो होना।
चलो निरंतर आप, नही पड़ता कुछ खोना।।

75.

यादें

यादें रहती साथ में, कहते हर इंसान।
द्वार खडी़ आ मौत जब, याद करे भगवान।।
याद करे भगवान, वही लगते तब अपने।
पल में पल को जोंड़, कहो अपने तुम सपने।।
सुवासिता कर जोंड़, कहे कुछ भेद बता दें।
खट्टी-मीठी बात, पुरानी जो है यादें।।

76.

छोटी

छोटी-छोटी बात पर, लड़ते घर में लोग।
सुख दुख में फिर साथ दे, मन में रख संयोग।।
मन में रख संयोग, कहें वे जो है अपने।
आँगन लेते बाँट, तोड़ देते हर सपने।।
सुवासिता दे ध्यान, गूँथ ले गम की चोटी।
मन में रख विश्वास, करे क्यों बातें छोटी।।

77.

मीठी

मीठी-मीठी सी लगे, तेरी पप्पी आज।
क्या खा कर तू आ गई, बता परी वो राज।।
बता परी वो राज, पिता गुड़िया से पूछे।
खाये क्या अंगूर, लिए थे कल दो गुच्छे।।
सुवासिता तुतलाय, कहे माँ ने मैं पीटी।
लो लो कल बेहाल, लगूँ मैं तुमको मीठी।।

78.

बातें

बातें कर ले प्रीत की, मुख पर रख मुस्कान।
फूल संग काँटा मिले, सोच जरा इंसान।।
सोच जरा इंसान, सभी रिश्ते को जानें।
कठपुतली के खेल, जगत को उपवन मानें।।
सुवासिता सुन बात, भूल मत ये सौगातें।
दिल से दिल के तार, जोंड़ती मीठी बातें।।

79.

चमका

चमका मेरा भाग्य का, तारा देखो आज।
हार कभी मानी नही, यही जीत का राज।।
यही जीत का राज, कही अच्छी है बातें।
पल में पल की आज, मिला सुन्दर सौगातें।।
सुवासिता दे ध्यान, सोचती ज्यादा कम का।
तारे चंदा देख, अकेला चंदा चमका।।

80.

गीता

गीता लेकर हाथ में, करो प्रतिज्ञा आज।
सत्य वचन बोलो सदा, रहे सत्य आवाज।।
रहे सत्य आवाज, झूठ हम फिर क्यों बोले।
नरक यही वो स्वर्ग, कर्म काँटे से तोले।।
सुवासिता ये देख, झूठ में मानव जीता।
मिले कर्म फल ज्ञान, यही कहती है गीता।।

81.

माना

माना आकर्षक दिखे, हरदम काला रंग।
खींची अपनी ओर ये, मन में भरे उमंग।।
मन में भरे उमंग, यही डर रूप घनेरा।
भले रूप विकराल, बिगाड़ेगा क्या मेरा।।
सुवासिता ये सूर्य, करे उजियारा जाना।
अपनो की पहचान, समय देती है माना।।

82.

कहना

कहना आवश्यक नही, तुमको मन के बोल।
नयन नयन से कह उठे, भाव बिना ही तोल।।
भाव बिना ही तोल, गगरिया कैसे फोड़ी।
बिन मुरली आवाज़, कहाँ पायलिया तोड़ी।।
सुवासिता ये मौन, नदी पावन बन बहना।
आयेगा वो तीर, तभी उससे कुछ कहना।।

83.

सहना

सहना चुप हो कर नही, नारी अत्याचार।
तोड़ भ्रमित दीवार को, ले अपना अधिकार।।
ले अपना अधिकार, रही क्यों बन बेचारी।
अगर बनी कमजोर, समझ खुद से तू हारी।।
सुवासिता सुन बात, कमर कस ले है कहना।
बढ़ा आत्मविश्वास, कभी दुख फिर मत सहना।।

84.

वंदन

वंदन नारी शक्ति को, मैं करती हूँ आज।
पत्नी बेटी माँ बहू, बन कर करती काज।।
बन कर करती काज, सदा रहती आभारी।
नव जीवन को साँस, दिये लक्ष्मी अवतारी।।
सुवासिता ये धूल, बना माथे का चंदन।
नजर दोष कर दूर, करूँ शत्-शत् मैं वंदन।।

85.

आसन

आसन नियमित जो करे, मिटे सकल सब रोग।
जीवन में सुख शांति से, काम करे वो लोग।।
काम करे वो लोग, कमल सा मुख है खिलता।
करे आदमी भोग, तभी दुख जग में मिलता।।
सुवासिता सुन बात, छोड़ तू सब सिंहासन।
लेना हो यदि लाभ, करो धरती पर आसन।।

86.

आतुर

आतुर रहती प्रेयसी, कहने को हर बात।
नयन-नयन से कह रहे, मन के सब हालात।।
मन के सब हालात, कही चूड़ी है खनकी।
आयी तेरी याद, रात में बिजली चमकी।।
सुवासिता रह मौन, काँच तोड़े क्रोधातुर।
साजन समझे पीर, रहे मिलने को आतुर।।

87.

आभा

आभा सूरज से सदा, होती कल की भोर।
लिए किरण उम्मीद की, चलो लगाते जोर।।
चलो लगाते जोर, दिखे चहुँ दिश हरियाली।
तम बनता यमराज, नष्ट करती खुशहाली।।
सुवासिता फिर देख, कहे तरुवर पर गाभा।
ऐसी ही आदर्श, बनो जैसे रवि आभा।।

88.

चितवन

चितवन जब देखे पिया, खिले सुगंधित फूल।
मंद-मंद हँस देख, भूल गई तन शूल।।
भूल गई तन शूल, बाल में बाँधे गजरा।
नयनाभिराम दृश्य, लगे आँखों का कजरा।।
सुवासिता सौभाग्य, खिला है मन का उपवन।
महका जीवन आज, देखते साजन चितवन।।

89.

मोहक

बच्चा तो मोहक लगे, सुन्दर दिखे कपोल।
कर अपनी गोद सब, सुनना चाहे बोल॥
सुनना चाहे बोल, बाँध रेशम की डोरी।
गम को जाते भूल, प्रीति की गाती लोरी॥
सुवासिता कर गौर, बात करते वो सच्चा।
बूढ़ा चाहे रोज, रहे मन बनकर बच्चा॥

90.

शीतल

शीतल पीपल छाँव से, मिले पथिक को चैन।
तले ठहर कर फिर बढ़े, सुन कोयल के बैन।।
सुन कोयल के बैन, कहे नाना के साथी।
वृक्ष दिए हैं काट, दिखा सौ बल का हाथी।।
सुवासिता भ्रम छोड़, स्वर्ण क्यों समझा पीतल।
अंगारो के बीच, ढूंढता फिरता शीतल।।

91.

हारा

हारा दूल्हा खेल में, जीती दुल्हन खेल।
शादी की इस रस्म में, मन का होता मेल।।
मन का होता मेल, सुहागन खुश हो बोली।
जीत गई मैं आज, सुनो साजन हमजोली।।
सुवासिता का भाव, बढ़ा दूल्हे से प्यारा।
प्रेम रहा है जीत, नही कोई है हारा।।

92.

जीता

जीता सोचो कौन है, कौन गया फिर हार।
कर्म वीर के मार्ग में, करती विजय पुकार।।
करती विजय पुकार, मिटे जीवन की बाधा।
मन से डर को त्याग, रोग दिखता ये आधा।।
सुवासिता बिन कर्म, अहम प्याला जो पीता।
होती उसकी हार, जगत में वो कब जीता।।

93.

नारी

नारी से सब पूछते, बतला तू है कौन।
मन से मृत हो कर सदा, रहती है क्यों मौन।।
रहती है क्यों मौन, दिखा मन का अंधेरा।
कर निज की पहचान, यही तो है जग तेरा।।
सुवासिता हर रूप, कहे तू पालनहारी।
कर के उत्तम कर्म, कहो हाँ मैं हूँ नारी।।

94.

साहस

करना साहस तू सदा, तब जीतेगा जंग।
कर्म लक्ष्य को ही बना, भर जीवन में रंग।।
भर जीवन में रंग, लगे फिर हर पल प्यारा।
हार बनी है बोझ, भार हिय पर ये सारा।।
सुवासिता कुछ सोच, दुखों से भी क्या ड़रना।
बढ़ते रहना रोज, समय पर साहस करना।।

95.

नटखट

नटखट मन होता सदा, कहता बूढ़ा आज।
पचपन में बचपन रहे, हँसी छिपाये राज।।
हँसी छिपाये राज, झूठ लगता है सच्चा।
गम को जाता भूल, खेलता बनकर बच्चा।।
सुवासिता सुन बात, दौड़ जाते हम सरपट।
बहा नयन से नीर, बोझ हूँ कहता नटखट।।

96.

अंकुश

रहता अंकुश में कहाँ, है बदला व्यवहार।
पीढ़ी देखो ये युवा, पीएँ मद घर द्वार।।
पीएँ मद घर द्वार, समझ संस्कारी डूबी।
हुए निरंकुश आज, भूल कर मानुष खूबी।।
सुवासिता सुन बात, पिता तेरा जो कहता।
कुछ तो अंकुश मान, जहाँ जिस घर में रहता।।

97.

चंदन

चंदन का तरु मैं पिया, बन तू खुशबू आज।
स्नेह डगर महके सदा, ऐसे हो कुछ काज॥
ऐसे हो कुछ काज, जगत को हम महका दें।
जैसे कोयल राग, चहक कर मन चहका दें॥
सुवासिता कर चाव, करो इसका अभिनंदन।
जग में उत्तम भाव, कहे शीतल है चंदन॥

98.

थोड़ा

थोड़ा हँसकर बोल दे, मिटे दुखों की धूप।
आँखों से आँखें मिला, खिले कमल समरूप॥
खिले कमल समरूप, खींचता सब अपने में।
खोए रहते लोग, जहाँ देखो सपने में॥
सुवासिता पहचान, यही है तेरा गठजोड़ा।
बिना समर्पण प्रेम, कहाँ कब होता थोड़ा॥

99.

पूरा

पूरा होता दिख रहा, शतकवीर संकल्प।
मेरे गुरु विज्ञात का, दूजा नहीं विकल्प॥
दूजा नहीं विकल्प, कलम यूँ हाथ थमाए।
सतत् सृजन के कर्म, विधा के भेद बताए॥
सुवासिता ले खोज, कुण्डली का कस्तूरा।
शब्द-शब्द को जोड़, अधूरा करती पूरा॥

100.

सपना

सपना मेरा सच हुआ, मुझे लगे ये आज।
कभी रही अंजान मैं, छंद बना अब साज।।
छंद बना अब साज, ताल मैं नित्य बजाती।
गिन कर मात्रा रोज, कुण्डली छंद सजाती।।
सुवासिता ये भेद, समझ कुण्डलियाँ जपना।
करूँ सृजन मैं रोज, हुआ पूरा ये सपना।।

चमेली कुर्रे 'सुवासिता'
जगदलपुर (बस्तर) छत्तीसगढ़
पता- जे. ई. डी. कालोनी
नयापारा मोतीलाल नेहरू वार्ड
मकान. क्रमांक- H-7
जगदलपुर (बस्तर) छत्तीसगढ़
मो.न.- (1) 8435452436

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **चमेली कुर्रे 'सुवासिता'**
पिता- श्री सोनरहर शिव कुर्रे
माता- श्रीमती केरा कुर्रे
जन्मतिथि- ८ मई
शिक्षा- एम.एस.सी.(प्राणी विज्ञान)
व्यवसाय- चिकित्सा प्रयोगशाला तकनीशियन (MLT), शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय जगदलपुर (बस्तर) छ.ग.

साझा काव्य संकलन-

१. हमराही
२. बज़्य-ए-तरब
३. माया
४. अरण्यधारा
५. कुण्डलियाँ यूँ बोलती है

सम्मान

१. काव्य गौरव सम्मान २०१७
२. काव्य गौरव सम्मान २०१८
३. काव्य मेध २०१८
४. कलम काव्य गौरव सम्मान २०१९
५. छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस साहित्य गौरव सम्मान २०१९
६. कलम शिक्षा २०१९
७. अरण्यधारा २०१९
८. दोहा विशारद सम्मान २०२०
९. साहित्य साधना सम्मान २०२०

मूल निवास स्थान पता-

ग्राम पो० - पोड़ी दल्हा, एस ० एस ० मेडीकोज, त०- अकलतरा,
जिला- जांजगीरचापा, पिन कोड - ४९५५५२
मो० -७०००६८३०९०

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-234-0

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/